ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा के गुणवत्ता की समस्याएं एवं समाधान

प्रमोद कुमार पाण्डेय*

***एसो० प्रो०, बी.एड. विभाग, नागरिक पी.जी. कॉलेज जंघई, जौनपुर**

Email: pramodpandeysndc@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19464023

Received on: 21/03/2026 Accepted on: 29/03/2026 Published on: 08/04/2026

सारांश:

ग्रामीण शिक्षा की गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं एवं उनके समाधान का अध्ययन आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में वांछित अस्तित्व के क्षेत्र, पर्वतीय स्थान तथा दूरवर्ती क्षेत्र में रहने वाले लोगों को सूचित बनाने में प्राथमिक शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। भारत में अधिकांश लोग गाँव में रहते हैं और यह शिक्षित भी हैं, अतः गाँव के विद्यालयों पर विशेष उत्तरदायित्व है कि वे वहाँ शिक्षा का प्रसार करें और गाँव के अंधकार को दूर करें। प्रस्तुत शोध के प्रमुख्य उद्देश्य ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का विश्लेषण करना । इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है । जौनपुर जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों के विद्यार्थी एवं शिक्षक को जनसंख्या के रूप में लिया गया है । अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में 150 विद्यार्थियों एवं 50 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक नमूना चयन विधि के माध्यम से किया गया है । प्रस्तुत शोध से निष्कर्ष पाया गया है कि ग्रामीण विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं की कमी पाई गई। प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव शिक्षा को प्रभावित करता है। विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति उनके अध्ययन को प्रभावित करती है। पारंपरिक शिक्षण विधियाँ प्रभावी नहीं हैं और तकनीकी संसाधनों की कमी पाई गई ।

प्रस्तावना:

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में ग्रामीण विद्यालयों का महत्वपूर्ण भूमिका है, किंतु यहाँ शिक्षा की गुणवत्ता अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं संरचनात्मक समस्याओं से प्रभावित है। गुणवत्ता, समानता और अवसर की दृष्टि से ग्रामीण शिक्षा अभी भी पिछड़ी हुई है। मानव के सर्वांगीण विकास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा मनुष्य के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में अधिकांश लोग गाँव में रहते हैं और यह शिक्षित भी हैं, अतः गाँव के विद्यालयों पर विशेष उत्तरदायित्व है कि वे वहाँ शिक्षा का प्रसार करें और गाँव के अंधकार को दूर करें। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का विस्तार हुआ है, लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता अनेक प्रकार की समस्याओं से अभी भी प्रभावित है। ग्रामीण

विद्यालयों के छात्रों तथा अध्यापकों को गाँव में जाकर शिक्षा के महत्व तथा स्वास्थ्य के सामान्य सिद्धांतों का भी परिचय कराना चाहिए।

अतः ग्रामीण शिक्षा की गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं एवं उनके समाधान का अध्ययन आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में वांछित अस्तित्व के क्षेत्र, पर्वतीय स्थान तथा दूरवर्ती क्षेत्र में रहने वाले लोगों को सूचित बनाने में प्राथमिक शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। प्रौढ़ शिक्षा के प्रयास के लिए विद्यालय के अध्यापकों को पूरा प्रयत्न करना चाहिए। यह कार्य माध्यमों जैसे कार्य-प्रदर्शनी, समाचार पत्र, ग्राम में पुस्तकालयों द्वारा किया जा सकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित अंधविश्वास तथा अनेक प्रकार के रीति-रिवाज, जो मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में बाधक कार्य करते हैं, उनके विरुद्ध शिक्षा दी जाए तो सरकारी कार्य को प्रोत्साहन दिया जाए। विद्यालय को गाँव के खेलों और मनोरंजन का केंद्र बनाया जाए।

ग्रामीण विद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारना देश के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। ग्रामीण विद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता कई समस्याओं से प्रभावित होती है, जैसे आधारभूत सुविधाओं की कमी, योग्य शिक्षकों का अभाव, पारंपरिक शिक्षण विधियाँ, आर्थिक कठिनाइयाँ, अभिभावकों की शिक्षा तथा पाठ्यक्रम का स्थानीय जीवन से संबंध, शिक्षा का बढ़ता व्यवसायीकरण, तकनीकी सुविधाओं की कमी। इन कारणों से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता और शिक्षा का स्तर गिर जाता है।

इन समस्याओं के समाधान हेतु समन्वित प्रयास आवश्यक है कि विद्यालयों में पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ, प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति हो, आधुनिक एवं बाल-केंद्रित शिक्षण विधियाँ अपनाई जाएँ, अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाए और साथ ही शिक्षा को स्थानीय आवश्यकताओं और जीवन से जोड़ना जरूरी है। तकनीकी संसाधनों का विकास करना तथा शिक्षा का मानवीय एवं मूल्य-परक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

शिक्षक का आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छा प्रभाव है। अनपढ़ एवं अशिक्षित ग्रामीण अनेक मामलों में शिक्षक से परामर्श करते हैं। अपनी विशिष्ट स्थिति के कारण शिक्षक समाज में परिवर्तन ला सकता है। वह ग्रामीण क्षेत्रों में नवजागरण तथा नवचेतना का निर्माण कर उन्हें नए समाज के दर्शन करा सकता है। वह अपने छात्रों के कोमल मस्तिष्क में सामाजिक परिवर्तन के बीज आरोपित कर भविष्य में सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। अतः सामूहिक प्रयासों द्वारा ग्रामीण शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार प्रदेश के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण—

ग्रामीण विद्यालय - गाँवों में स्थापित ऐसे शिक्षण संस्थान, जिनमें ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं, ग्रामीण विद्यालय के रूप में जाने जाते हैं।”

शिक्षा की गुणवत्ता - ऐसी शिक्षा जो शिक्षार्थियों को प्रासंगिक ज्ञान, कौशल, मूल्य और व्यावहारिक समझ प्रदान करे, जिससे वे रचनात्मक, समावेशी और सकारात्मक भूमिका निभाने में सक्षम बनें।

शिक्षण विधियाँ - शिक्षण विधि’ से अभिप्राय उन सामान्य सिद्धांतों, तरीकों तथा कक्षा प्रबंधन की रणनीतियों से है, जिनका उपयोग शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए करते हैं। वे विधियाँ एवं प्रक्रियाएँ जिनके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करते हैं।

आधारभूत सुविधाएँ - आधारभूत सुविधाएँ वे आवश्यक संसाधन और व्यवस्थाएँ होती हैं, जो किसी भी कार्य या संस्था के सुचारु संचालन के लिए अनिवार्य होती हैं।

विद्यालय में उपलब्ध आवश्यक आधारभूत सुविधाओं में भवन, कक्षाएँ, पुस्तकालय, शौचालय, पेयजल, बिजली फर्नीचर तथा शिक्षण सामग्री आदि शामिल होते हैं।

तकनीकी संसाधन - तकनीकी संसाधन वे आधुनिक उपकरण और डिजिटल साधन होते हैं जिनकी सहायता से किसी कार्य को सरल, तेज और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। विद्यालयों में कंप्यूटर, स्मार्ट बोर्ड, इंटरनेट आदि तकनीकी संसाधनों के उदाहरण हैं जिनसे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व - वर्तमान समय में यह अनुभव किया जा रहा है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का विस्तार तो हुआ है, परंतु उसकी गुणवत्ता अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। ग्रामीण विद्यालयों में अनेक प्रकार की समस्याएँ विद्यमान हैं, जो विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास को प्रभावित करती हैं।

इस अध्ययन के माध्यम से ग्रामीण शिक्षा की समस्याओं की पहचान कर उनके व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जिससे शिक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाया जा सके। यह अध्ययन शिक्षकों, नीति-निर्माताओं तथा अभिभावकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

समस्या कथन - प्रस्तुत शोध के लिए समस्या कथन इस प्रकार है-

ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक कारणों से प्रभावित हो रही है, जिसके कारण विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पा रहा है। अतः इस समस्या का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य - प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं-

1) ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना।

2) ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का विश्लेषण करना।

3) शिक्षण प्रक्रिया में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना।

4) ग्रामीण शिक्षा की गुणवत्ता सुधार के उपायों का सुझाव देना।

5) शिक्षक, अभिभावक एवं समुदाय की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ —

1) ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता निम्न स्तर की है।

2) आधारभूत सुविधाओं की कमी शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

3) प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी विद्यार्थियों के प्रदर्शन को प्रभावित करती है।

4) आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ शिक्षा पर प्रभाव डालती हैं।

5) आधुनिक शिक्षण विधियों का अभाव शिक्षा की गुणवत्ता को कम करता है।

अध्ययन की सीमाएँ (सीमांकन) —

1) यह अध्ययन केवल ग्रामीण विद्यालयों तक सीमित है।

2) अध्ययन में सीमित संख्या में विद्यालयों को शामिल किया गया है।

3) यह अध्ययन विशेष क्षेत्र (जिले/राज्य) तक सीमित है।

4) अध्ययन के निष्कर्ष उपलब्ध आंकड़ों पर आधारित हैं।

शोध विधि - इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जाएगा। इस अध्ययन के अंतर्गत ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता से संबंधित समस्याओं एवं उनके समाधान का अध्ययन किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श -

जनसंख्या : जौनपुर जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों के विद्यार्थी एवं शिक्षक।

न्यादर्श : अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में 150 विद्यार्थियों एवं 50 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक नमूना चयन विधि के माध्यम से किया जाएगा।

शोध उपकरण —

प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन

सांख्यिकीय तकनीकें —

डेटा के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा—

1) प्रतिशत

2) मध्यमान

3) तालिका विश्लेषण

परिणाम एवं निष्कर्ष —

परिणाम —

1) ग्रामीण विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं की कमी पाई गई।

2) प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव शिक्षा को प्रभावित करता है।

3) विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति उनके अध्ययन को प्रभावित करती है।

4) पारंपरिक शिक्षण विधियाँ प्रभावी नहीं हैं।

5) तकनीकी संसाधनों की कमी पाई गई।

निष्कर्ष —

1) ग्रामीण शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की अत्यधिक आवश्यकता है।

2) शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

3) शिक्षा को स्थानीय जीवन से जोड़ना आवश्यक है।

4) आधुनिक तकनीक का उपयोग बढ़ाना चाहिए।

5) अभिभावकों की भागीदारी आवश्यक है।

शैक्षिक निहितार्थ —

1) विद्यालयों में आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।

2) प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की जाए।

3) आधुनिक शिक्षण विधियों को अपनाया जाए।

4) अभिभावकों को जागरूक किया जाए।

5) शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाया जाए।

संदर्भ:

- गुप्ता, एस. पी. & गुप्ता, ए. (2013) *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*, शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता, अलका (2015). *यू.जी.सी. राष्ट्रिय पात्रता परीक्षा शिक्षाशास्त्र*. शारदा पुस्तक भवन. इलाहाबाद.

- गुप्ता, एस पी और गुप्ता, अलका (2011). *व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ*, शारदा पुस्तक भवन. इलाहाबाद.
- गुप्ता, एस पी और गुप्ता ,ए (2011). *अनुसंधान संदर्शिका*, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
- शर्मा, आर ए और चतुर्वेदी, एस (2011). *अध्यापक शिक्षा* . इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस.मेरठ.
- लाल, आर बी (2008). *भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं*. एपसाइलन पब्लिशिंग हाउस प्रा०लि ० कानपुर.
- पाण्डेय, आर (2013). *शिक्षा के मूल सिद्धांत* , अग्रवाल पब्लिकेशंस. आगरा..
- पांडेय डॉक्टर के पी (2018) *शैक्षिक अनुसंधान,* विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, पांचवा संस्करण.
- पांडेय डॉक्टर के पी (2019) *नवीन शिक्षा मनोविज्ञान,* विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी पांचवा संस्करण